पाठ – पहली बूँद (कविता)

1.वह पावस का प्रथम दिवस जब,.....नव-जीवन की ले अँगड़ाई।
भावार्थ- कवि के अनुसार, वर्षा ऋतु का पहला दिन आते ही, जब पहली बूँद धरती पर गिरी, तो प्रकृति में एक नया उत्साह जाग उठा। तपती गर्मियों के बाद, यह बूँद जीवन देने वाली बनकर आई और धरती में दबे बीजों को जगा दिया। अंकुरों का फूटना मानो प्रकृति की नवजीवन की अँगड़ाई लेने जैसा था। यह दृश्य धरती पर एक नई चेतना और सजीवता को बताता है।

2. धरती के सूखे अधरों पर,.....पहली बूँद धरा पर आई॥
भावार्थ- प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहता है कि सूखी और प्यासी धरती के होंठों पर यह पहली बूँद अमृत के जैसे गिरी। इससे बेजान धरती को नया जीवन मिल गया। हरी दूब, जो वसुंधरा के रोमों की तरह प्रतीत होती है, वह भी पुलकित होकर मुस्काने लगी। यह वर्षा की पहली बूँद सिर्फ पानी नहीं, बल्कि धरती के लिए जीवन, आशा और उल्लास लेकर आई।

3. आसमान में उड़ता सागर,.....पहली बूँद धरा पर आई॥
भावार्थ- वर्षा ऋतु आने पर प्रकृति में हुए बदलाव पर कवि कहता है कि आकाश में उड़ते बादल और चमकती बिजलियाँ मानो सुनहरे पंखों से युक्त सागर के समान लग रही हैं। गरजते बादलों की आवाज़ किसी नगाड़े के समान है, जो धरती की यौवनता को जगाने का प्रयास कर रही है। जबसे यह वर्षा की पहली बूँद धरती पर आई तबसे इसका सौन्दर्य और भी बढ़ गया है।